C.W

~~7.04.2021~~ 7.04.2021

Paper-1 (B.A-I) ~~7.04.2021~~

History of Ancient India

Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P. College.
Bara Chakiya

वैदिक युग का महत्व

Date :- 12.02.2022

(1) उत्तर भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना के विकास में वैदिक सभ्यता का प्रत्यक्ष योगदान रहा। फिर वैदिक संस्कृति का प्रसार दक्षिण भारत तथा भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य भागों में भी हुआ। इस प्रकार एक दृष्टि से सम्पूर्ण भारतीय समाज तथा संस्कृति के विकास में इस सभ्यता का योगदान रहा है जैसा कि हम जानते हैं कि वैदिक विचारधारा के प्रसार के साथ भारत में महापाषाणिक संस्कृति का प्रभाव कम होने लगा।

(2) हड़प्पाई लोगों के विपरीत वैदिक आर्यों की दृष्टि लचीली थी तथा उनमें विस्तार की अदम्य आकांक्षा थी। उन्होंने देशी तत्वों के साथ संघर्ष ही नहीं किया वरन् देशी संस्कृति के साथ सामंजस्य भी स्थापित किया। वे मुख्यतः पशुचारक थे किंतु पूर्ववर्ती भारतीय संस्कृतियों के साथ सम्पर्क के परिणाम स्वरूप इन्होंने कृषि पेशों को अपना लिया था। फिर आर्यों के द्वारा गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में कृषि का प्रसार किया गया। बेहतर किस्म के हथियारों एवं रथ के माध्यम से इन्होंने अपने शत्रुओं पर विजय पायी तथा प्रकृति एवं पर्यावरण के साथ संघर्ष कर बस्तियों का विकास किया।

(3) वैदिक ग्रंथों के अध्ययन के पश्चात यह प्रतीत होता है आर्यों की दृष्टि आशावादी एवं प्रगतिशील थी। वैदिक आर्य जैसे-जैसे पूरब की ओर बढ़ते गए वे पश्चिम के क्षेत्र को भूलकर वर्तमान के साथ अपना संबंध जोड़ते गये। वे जीवन के गीत गाते थे मृत्यु की चर्चा कभी नहीं करते केवल शत्रुओं के परिप्रेक्ष्य को छोड़कर, यही वजह है कि

1000 वर्षों के अंदर ही वैदिक आर्यों का प्रसार उत्तर-पश्चिम से संपूर्ण उत्तर भारत में हो गया।

(4) भारत की आधारभूत राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं का निर्माण वैदिक युग में ही हुआ। इस काल में राजतंत्र तथा नौकरशाही का आरंभिक रूप विकसित हुआ। वर्ण तथा जाति पर आधारित समाज का आधारभूत ढाँचा भी इस काल में ही अस्तित्व में आया। फिर भी इस काल में सामाजिक समानता का तत्व अधिक प्रबल रहा क्योंकि सामाजिक विभाजन का आधार पेशा था न कि जन्म। इसी प्रकार परवर्ती काल की तुलना में महिलाओं की दशा भी कहीं अच्छी थी यही वजह है कि कतिपय आधुनिक सुधारकों ने भी वैदिक समाज को एक आदर्श समाज के मॉडल के रूप में ग्रहण किया।

(5) वैदिक आर्यों के खान-पान एवं रहन सहन ने भी भारतीय सामाजिक जीवन को प्रभावित किया। वैदिक सभ्यता से पूर्व की संस्कृतियों में पशु-पालन का मूल उपयोग मांसाहार के लिए था। किंतु वैदिक आर्यों ने मांसाहार के साथ-साथ दुग्ध उत्पादन पर विशेष बल दिया तथा दुग्ध निर्मित विशेष वस्तुओं का उपयोग करते रहे। आगे भी यह प्रवृति बनी रही।

(6) अगर हम वैदिक धर्म पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि वैदिक आर्यों की दृष्टि इहलौकिक थी क्योंकि उनकी उपासना का उद्देश्य था भौतिक सुखों की प्राप्ति मोक्ष नहीं। यही वजह है कि वैदिक धर्म ने 19वीं सदी के भारतीय धर्म सुधारकों का ध्यान आकर्षित किया। ये सुधारक वैदिक धर्म का दृष्टांत देकर छुआ-छूत एवं मूर्ति-पूजा जैसी कुरीतियों पर प्रहार करते रहे।

C.W १००९ · [redacted] paper - III
Madival India
[redacted]
Date :- 12·02·2022

Date :- 12·02·2022
Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S·R·A·P. college, chakia

Q. फिरोजशाह तुगलक की धार्मिक नीति एवं उसके सार्वजनिक
निर्माण कार्यों के विशेष संदर्भ में उसके व्यक्तित्व का
मूल्यांकन कीजिए।

A. फिरोजशाह तुगलक के व्यक्तित्व तथा कार्यों के दो
पक्ष हैं :- नकारात्मक तथा सकारात्मक। उसकी धार्मिक
नीति उसके नकारात्मक पक्ष को दर्शाती है तो उसके
सार्वजनिक निर्माण कार्य सकारात्मक पक्ष को। इस
प्रकार अगर हम फिरोजशाह तुगलक की धार्मिक नीति
तथा सार्वजनिक निर्माण कार्य पर दृष्टिपात करते हैं
तो उसके व्यक्तित्व एवं उपलब्धियों की मूलभूत
विसंगति उजागर हो जाती है। जहाँ उसकी धार्मिक
नीति उसे एक कट्टर मुस्लिम शासक के रूप में
स्थापित करती है वहीं उसके सार्वजनिक निर्माण
कार्य एक शासक के रूप में उसकी अपार रचनात्मक
क्षमता को दर्शाते हैं।

(1) रूढ़िवादी धार्मिक नीति
(2) सार्वजनिक निर्माण कार्य - (a) लोककल्याणकारी कार्य
(b) सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

फिरोजशाह तुगलक ने फलों की खेती में भी विशेष
दिलचस्पी दिखायी उसने नये प्रकार के फलों विशेषकर
नये आमों के किस्म को भारत में लाया तथा उसके
बगीचे स्थापित किये। इस प्रकार बागवानी कृषि
के विकास में भी फिरोजशाह तुगलक की महत्वपूर्ण
भूमिका रही। बताया जाता है कि उसने फलों के
1200 बगीचे लगवाये थे जिनसे राज्य को लगान
80 हजार टंका प्रतिवर्ष की आमदनी थी।
(3) फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली और हरियाणा क्षेत्र में
नये नगरों को स्थापित किया यथा - फिरोजशाह
कोटला, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, हिसार-फिरोज आदि)
सार्वजनिक निर्माण कार्य
इस प्रकार
फिरोजशाह तुगलक को मध्ययुग के विलक्षण शासक
के रूप में स्थापित करते हैं वहीं उसकी रूढ़िवादी
धार्मिक नीति साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया
को तीव्र कर देती है। अतः ऐसा मानना अतिश्योक्ति
पूर्ण नहीं लगता है जहाँ फिरोजशाह तुगलक के साथ एक
नये युग की शुरुआत हुई वहीं पुराने काल खण्ड का अंत

Weekly report of online classes
from - 7.02.2022 to 12.02.2022

Name - Dr Deepak kumar Rajak
- S.R.A.P college, Bara Chakiya
History department

Date	Day	Topic	Topic	Total class
7.02.2022	Monday	संगम शब्द मिथक या वास्तविकता	सल्तनत कालीन कृषि अर्थव्यवस्था	02
8.02.2022	Tuesday	अध्ययन स्रोत के रूप में अलबरूनी का विवरण	अशोक के प्रशासनिक सुधार	02
9.02.2022	Wednesday	गुप्तकालीन समाज का मूल्यांकन	मुगलों का राजनीतिक विस्तार	02
10.02.2022	Thursday	गुप्त साम्राज्य का पतन का मूल्यांकन	मुगलों का राजनीतिक विस्तार	02
11.02.2022	Friday	मौर्य साम्राज्य के पतन की समीक्षा कीजिए।	सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव	02
12.02.2022	Saturday	वैदिक युग का महत्व	फिरोजशाह तुगलक की धार्मिक नीति एवं सार्वजनिक निर्माण कार्य का मूल्यांकन	02
				12 class

Sing - Deepak kumar Rajak
12.02.2022

Date :- 14.02.20?? Paper I

Ancient India

Dr. Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P College, Chakiya

Q. गुप्त शक्ति के उत्थान तथा विकास में वैवाहिक संबंधों की भूमिका :-

उत्तर: गुप्त शक्ति की प्रगति में वैवाहिक संबन्धों की वही भूमिका रही जो आरंभिक मध्यकालीन शासकों की सफलता तथा 16वीं एवं 17वीं सदी में यूरोपीय शासकों की सफलता में रही थी।

गुप्त शक्ति के संस्थापक चन्द्रगुप्त I ने अपनी सैन्य एवं कूटनीतिक स्थिति को मजबूत करने के लिए लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमार देवी के साथ विवाह किया। चूंकि इस समय उत्तर भारत में लिच्छवि राज्य एक महत्वपूर्ण राज्य था अतः इस संबन्ध का लाभ निश्चय ही गुप्तों को प्राप्त हुआ। गुप्त इस सम्बन्धों को कितना महत्व देते थे इस बात का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि समुद्रगुप्त ने 'लिच्छवि - दौहित्र' की उपाधि धारण की। फिर समुद्रगुप्त की साम्राज्यवादी संरचना में भी वैवाहिक संबन्धों का विशेष महत्व था, जैसा कि हमें समुद्रगुप्त की 'प्रयाग प्रशस्ति' से ज्ञात होता है कि पराजित शासकों एवं सामंतों के समक्ष तीन शर्तों में एक शर्त 'कन्योपायन' (पुत्री अर्पित करना) को रखा गया। वस्तुतः इस काल के सामंती वातावरण में वैवाहिक संबन्ध ही अधीनस्थ शासकों एवं सामंतों की वफादारी सुनिश्चित करने का सबल माध्यम था। कुछ परिवर्तनों के साथ आगे अकबर ने भी इस नीति को अपनाया।

समुद्रगुप्त के उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपने पिता की सैनिक विजय की नीति को पितामह के वैवाहिक गठबन्धन की नीति के साथ जोड़ दिया। इसने एक नाग वंश की राजकुमारी से भी विवाह किया। आगे उसने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह एक वाकाटक शासक रुद्रसेन द्वितीय से करवाया। इसका बहुत बड़ा लाभ उसे प्राप्त हुआ। वाकाटक शक्ति के सहयोग से वह पश्चिम भारत में शकों के विरुद्ध सफलता पायी। और गुप्तों का गुजरात क्षेत्र पर कब्जा हो गया।